आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (16-30 नवंबर, 2025)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं संबंधित जानकारी

फसल मौसम 2025-26

देशभर में गेहूं की बुवाई तेजी पकड़ रही है, और किसान समय, बीज तथा श्रम की बचत के लिए मशीन द्वारा बुवाई को अधिक अपना रहे हैं। सभी किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी बुवाई के समय और सिंचाई की उपलब्धता के अनुसार उच्च उत्पादकता वाली एवं जलवायु-सहिष्णु किस्मों का चयन करें और हमेशा विश्वसनीय स्रोत से ही बीज खरीदें।

• अक्टूबर में गेहूं की बुवाई करने वाले किसान समय पर खरपतवार नियंत्रण करें और स्वस्थ फसल स्थापना के लिए बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली सिंचाई अवश्य दें। शुरुआती नुकसान से बचाव के लिए खेत की नियमित निगरानी करें।

• नवंबर के पहले सप्ताह में गेहूं की बुवाई करने वाले किसान उचित अंकुरण सुनिश्चित करें और बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली सिंचाई की योजना बनाएं।

• नवंबर में बुवाई करने वाले किसान 20 नवंबर तक अपनी बुवाई पूरी कर लें और समय पर बुवाई के लिए उपयुक्त उच्च उत्पादकता वाली किस्मों का चयन करें। (सूची नीचे दी गई है)

सामान्य सुझाव

✓ अपने क्षेत्र और खेती की स्थिति के अनुसार सबसे उपयुक्त किस्म का चयन करें।

✓ कंबाइन से कटे धान के खेतों में फसल अवशेषों की उपस्थिति में हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग कर के सीधे गेहूं की बुवाई की जा सकती है।

✓ समय पर बुवाई करें और देरी से बचें, ताकि फसल पकने के समय पड़ने वाली गर्मी से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

✓ अन्य क्षेत्रों/ज़ोनों की किस्में न उगाएँ, इससे फसल में रोगों का जोखिम बढ़ सकता है।

✓ अधिकतम उपज के लिए उर्वरक, सिंचाई, खरपतवारनाशी और फफूंदनाशी का संतुलित एवं उचित उपयोग करें।

✓पानी बचाने और लागत में कटौती के लिए खेतों की समय पर और विवेकपूर्ण सिंचाई करें।

उत्तरी, पूर्वी, मध्य और प्रायद्वीपीय भारत भारत में समय पर, बुआई के लिए गेहूं की किस्में

समय पर बोई जाने वाली गेहूं की किस्में (नवंबर माह के लिए)	
क्षेत्र	**क़िस्म**
एनडब्ल्यूपीजेड: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिम यूपी	एचडी 3386, पीबीडब्ल्यू 826, एचडी 3406, डीबीडब्ल्यू 222, डीबीडब्ल्यू 187
एनईपीजेड: पूर्वी यूपी, बिहार, बंगाल, झारखंड	डीबीडब्ल्यू 386, एचडी 3388, डीबीडब्ल्यू 187, पीबीडब्ल्यू 826, एचडी 3411, डीबीडब्ल्यू 222, एचडी 3249, एचडी 3086
सीजेड: एमपी, गुजरात, राजस्थान (उदयपुर एवं कोटा)	एचआई 1699, एनडब्ल्यूएस 2194, एचआई 1650, जीडब्ल्यू 513, जीडब्ल्यू 547, डीबीडब्ल्यू 187, एचआई 1636, एमएसीएस 6768, जीडब्ल्यू 366
पीजेड: महाराष्ट्र, कर्नाटक	डब्ल्यूएच 1306, एनएसडब्ल्यू 2222, डीबीडब्ल्यू 443, एकेएडब्ल्यू 5100, पीबीडब्ल्यू 891, एमपी 1378, एमएसीएस 4100, डीडीडब्ल्यू 48 (इयूरम), एचआई 8826 (इयूरम)

बुआई का समय, बीज दर और उर्वरक प्रयोग: भारत में गेहूं की फसल विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उत्पादन स्थितियों में उगाई जाती है। बुआई के समय में क्षेत्र दर क्षेत्र और अलग-अलग उत्पादन परिस्थितियों में थोड़ा अंतर होता है। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।

गेहूं की फसल के लिए क्षेत्रवार बुआई बीज दर एवं उर्वरक की मात्रा

क्षेत्र	बुआई की स्थिति	बीज दर	उर्वरक की खुराक और प्रयोग का समय
एनडब्ल्यूपीजेड और एनईपीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	150:60:40 किग्रा एनपीके/हे (बुवाई के समय बेसल के रूप में 1/3 एन और पूर्ण पी और केऔर शेष एनको पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में विभाजित करें)
सीजेड, पीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	120:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी का छिड़काव)

• बहुशाकनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) सहित विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का अकेले या पेंडिमेथालिन 30 ईसी 2.0 लीटर/एकड़ के साथ छिड़काव करें।
• बुवाई के 0-3 दिन बाद 150-200 लीटर पानी का उपयोग करके 800 मिलीलीटर/एकड़ की दर से एक्लोनिफेन + डाइफ्लुफेनिकन + पाइरोक्सासल्फोन (मैटेनो मोर) के तैयार मिश्रण का छिड़काव करें।
• कठिया गेहूं में पाइरोक्सासल्फोन आधारित शाकनाशी के प्रयोग से बचें।
• किसानों को फसल पर छिड़काव तब करना चाहिए जब मौसम साफ़ हो, यानी बारिश, कोहरा/ओस आदि न हो।

सिंचाई

• किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली सिंचाई करें।

दीमक नियंत्रण

• दीमक प्रभावित क्षेत्रों में, दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरोपाइरीफॉस 0.9 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज (4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) से बीज उपचार करें। थियामेथोक्साम 70डब्लूएस (क्रूजर 70 डब्लूएस) 0.7 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज (4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) या फिप्रोनिल (रीजेंट 5एफएस 0.3 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज या 4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) से बीज उपचार भी बहुत प्रभावी है।

14/11/25
(रतन तिवारी)
निदेशक